दिनांक :- 18-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

इकाई :- सात

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- धर्म :———

(5) संजय वेलिट्ठपुत्त (अनिश्चयवादी) — इन्होंने तो किसी मत को स्वीकार किया है और न ही खंडन किया है। इसका मानना है कि न तो यह कहा जा सकता है कि स्वर्ग या नरक है या फिर नहीं है।

(6) चार्वाक — चार्वाक को बृहस्पति का शिष्य माना जाता है और उसने बृहस्पति सूत्र ग्रंथ भी लिखा

है। चार्वाक भौतिकीवादी दार्शनिक है। उसका मानना है कि प्रत्यक्ष अनुभव ही एक मात्र ज्ञान का साधन है। पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु के रूप में अचेतन अवस्था में प्राप्त द्रव्य एकमात्र वास्तविकता है। भौतिक तत्वों से बना शरीर मानव का एकमात्र सार है। राजा एकमात्र देवता है। मृत्यु मानव का एकमात्र अंत है। ऐन्द्रिक आनंद की जीवन का एक मात्र उद्देश्य है। मृत्यु के बाद न तो स्वर्ग है और नही इसलिये कर्म तथा पुनर्जन्म अर्थ नही रखता है।

जैन धर्म —

जैन धर्म की मान्यता के अनुसार यह एक शाश्वत धर्म है यह अनादि काल से प्रारंभ हुआ है तथा अनंत काल तक अस्तित्व में रहेगा।

जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकरो की मान्यता है। जो निम्नांकित है

① ऋषभदेव ② अजितनाथ ③ संभवनाथ
④ अभिनंदन ⑤ सुमितनाथ ⑥ पद्मप्रभु

(7) सुपार्श्वनाथ (8) चंद्र (9) प्रभु (10) पुष्पदंत
(11) शीतलनाथ (12) श्रेयांशनाथ (13) वसुपूज्य
(14) विमलनाथ (15) अनंतनाथ (16) धर्मनाथ
(17) कुंथुनाथ (18) अरसनाथ (19) मल्लिनाथ
(20) निशुव्रतनाथ (21) नमिनाथ (22) अरिष्टनेमी
(23) पार्श्वनाथ (24) महावीर

प्रथम तीर्थकार ऋषभदेव का प्रतीक सांढ़ माना जाता है। माना जाता है कि इन्होंने कैलाश पर्वत पर अपने शरीर का त्याग किया था इनको आदिनाथ के नाम से जाना जाता है।

ऋषभदेव की चर्चा अरिष्टनेमि के साथ ऋग्वेद के केसी सुक्त में भी मिलती है।

प्रारंभिक भागवत पुराण तथा वायु पुराण में ऋषभदेव को विष्णु का अवतार माना गया है। 22वे तीर्थकार अरिष्टनेमि को भी वासुदेव कृष्ण का भाई बताया गया है।

दूसरे तीर्थंकार अजितनाथ का प्रतीक हाथी है।
22वें तीर्थंकार नेमिनाथ का प्रतीक शंख (conch shell) है
23वें तीर्थंकार पार्श्वनाथ का प्रतीक सांप है। (सर्पफण)
24वें तीर्थंकार का प्रतीक सिंह है।
तेइसवें तीर्थंकार पार्श्वनाथ बनारस के राजा अश्वसेन के पुत्र थे। 30 वर्ष की अवस्था में उन्होंने गृह त्याग किया तीन मास की घोर तपस्या के बाद उनको कैवल्य की प्राप्ति हुई। 100 वर्ष की अवस्था में बंगाल के सम्मेद शिखर पर उन्होंने अपने शरीर का त्याग किया।

महावीर

महावीर का जन्म 540ई० पू० में वैशाली के निकट कुंडग्राम में हुआ था। उसके पिता का नाम सिद्धार्थ था जो ज्ञातृक क्षत्रियों के संघ के प्रधान थे जो वज्जि संघ का एक प्रमुख सदस्य था। उसकी माता त्रिशला अथवा विदेहदत्ता थी जो लिच्छवी कुल के प्रमुख चेटक की बहन थी।

Scanned with CamScanner

महावीर के बचपन का नाम वर्द्धमान था।
युवावस्था में महावीर का विवाह कुण्डिन्य गोत्र की कन्या यशोदा से हुआ जिससे उन्हें प्रियदर्शना (अणोज्जा नामक पुत्रि प्राप्त हुई। उसका विवाह जमाली से हुआ। जमाली ने स्वंय महावीर से दीक्षा ली। आगे उसे महावीर से मतभेद हो गया। उसके बाद जमाली ने अपना एक अलग सम्प्रदाय बहुरवाद चलाया है।
कल्पसूत्र तथा आयरांग सूत्र में महावीर की कठिन तपस्या का वर्णन मिलता है।
महावीर ने अपने अग्रज नंदिवर्द्धन से अनुमति लेकर 30 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग किया।
42 वर्ष की अवस्था में 12 वर्ष की घनघोर तपस्या के उपरांत जृम्भिका ग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी के त पर एक साल वृक्ष के नीचे उन्हें कैवल्य (ज्ञान) प्राप्त हुआ।

Scanned with CamScanner

ज्ञान प्राप्ति के पश्चात वे 'कैवलिन' (ज्ञानप्राप्त व्यक्ति) जिन, (इंद्रियों का विजेता), अर्हत (योग्य) तथा निर्ग्रंथ (बंधन रहित) कहे गये। अपनी साधना में अटल रहने तथा अतुल पराक्रम दिखाने के कारण उन्हें 'महावीर' नाम से संबोधित किया कि गया।

जैन धर्म में चौबीस तीर्थंकरों की परंपरा स्वीकार करने पर कालचक्र उत्पन्न हो जाता है। इसके मानने से जैन धर्म की स्थापना का काल लगभग 900 ई० पू० हो जाता है। परंतु जैसा कि ज्ञात होता है कि मध्य गंगा घाटी 600 ईसा पूर्व लगभग आबाद हुई जबकि प्रारंभिक 15 तीर्थंकर इसी क्षेत्र से आये थे। अतः जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक महावीर को ही माना जाना चाहिए। तीर्थंकरों की परंपरा केवल जैन धर्म की ऐतिहासिकता प्रदर्शित करने के लिए अपनाई गई है।

कैवल्य ज्ञान प्राप्त करने के बाद महावीर ने 30 वर्ष तक समाज में उसका प्रकाश फैलाया। चंपा वैशाली, राजगृह, नालंदा,

श्रावस्ती और कौशांबी उनके प्रमुख केन्द्र थे। दिगम्बर मान्यता के अनुसार महावीर का प्रथम उपदेश राजगृह के विपुलाचल पर्वत पर हुआ।

कैवल्य ज्ञान प्राप्त करने के बाद महावीर ने ३० वर्ष तक समाज में उसका प्रकाश। राजगृह में मेघकुमार को दीक्षा दी। कुंडग्राम में उन्होंने देवनंदा ब्राह्मणी तथा ब्राह्मण ऋषभदत्त को दीक्षा दी। उसी समय उसने अपनी पुत्री प्रियदर्शना और जमाली (जमाता) को भी दीक्षा दी। कौशांबी में उन्होंने राजा शतानिक के पुत्र उदयन को दीक्षा दी। राजवंश का संरक्षण भी जैन धर्म के प्रचार-प्रसार का सबसे बड़ा कारण बना। महावीर स्वामी के तात्कालिक वज्जि, लिच्छवी तथा मगध के राजवंशों से पारिवारिक संबंध थे। जैनों और बौद्धों दोनों की ही मान्यता है कि मगध की शासक अजातशत्रु और बिंबिसार उनके संरक्षक थे।

Scanned with CamScanner